छंदों से सम्बंधित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. घिर रहे थे घुँघराले बाल, अंश अवलम्बित मुख के पास।
नील घन-शावक-से सुकुमार, सुधा भरने को विधु के पास ॥
उपर्युक्त पंक्तियों में अलंकार है—
(क) उत्प्रेक्षा **(ख) उपमा** (ग) दृष्टान्त (घ) प्रतीप

2. चरन धरत चिंता करत, चितवत चारिउ ओर।
सुबरन को खोजत फिरत, कवि ब्यभिचारी चोर ॥
में अलंकार है—
(क) उपमा (ख) यमक (ग) रूपक **(घ) श्लेष**

3. गुरु पद रज मृदु मंजल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन ॥ में अलंकार है—
(क) यमक **(ख) अनुप्रास** (ग) श्लेष (घ) उपमा

4. अम्बर पनघट में डुबो रही, ताराघट ऊषा नागरी। में अलंकार है—
(क) यमक **(ख) रूपक** (ग) भ्रान्तिमान (घ) अनुप्रास

5. करत प्रवेस मिटे दु:ख दावा। जो जोगी परमारथ पावा।। में अलंकार है—

(क) उत्प्रेक्षा (ख) प्रतीप
(ग) भ्रान्तिमान (घ) सन्देह

6. 'कैधों व्योमबीथिका भरे है भूरि धूमकेतु, कैधौं चली मेरु तैं कृसानुसरि भारी है।' में अलंकार है—

(क) प्रतीप (ख) सन्देह
(ग) भ्रान्तिमान (घ) अनन्वय

7. "राम से राम सिया से सिया, सिर मौर बिरंचि बिचारि सँवारे।" में अलंकार है—

(क) सन्देह (ख) प्रतीप (ग) अनन्वय (घ) रूपक

8. "रहिमन अँसुआ नयन ढरि, जिय दु:ख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ ।।"
पद में निहित अलंकार है—

(क) अनन्वय (ख) रूपक (ग) सन्देह (घ) दृष्टान्त

9. "अजौं तर्‌यौना ही रह्‌यौ, श्रुति सेवत इक रंग।" इस काव्य-पंक्ति में अलंकार है—

(क) यमक (ख) श्लेष (ग) रूपक (घ) अनुप्रास

10. "ऊधौ जोग जोग हम नाहीं।" इस काव्य-पंक्ति में अलंकार है—

(क) रूपक (ख) यमक (ग) उत्प्रेक्षा (घ) अनन्वय

11. जहाँ उपमान के अभाव में उपमेय को ही उपमान मान लिया जाता है, वहाँ अलंकार होता है—

(क) उपमा (ख) रूपक (ग) अनन्वय (घ) सन्देह

12. जहाँ प्रसिद्ध उपमान को उपमेय बना दिया जाए अथवा उसकी व्यर्थता प्रदर्शित की जाए, वहाँ अलंकार होता है—

(क) उत्प्रेक्षा (ख) रूपक (ग) उपमा (घ) प्रतीप

13. जहाँ उपमेय को उपमान और उपमान को उपमेय बना दिया जाए वहाँ कौन-सा अलंकार होता है ?

(क) रूपक (ख) प्रतीप (ग) अनन्वय (घ) उत्प्रेक्षा

14. "उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा। मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा।।" में निहित अलंकार है—

(क) भ्रान्तिमान (ख) दृष्टान्त (ग) उत्प्रेक्षा (घ) सन्देह

15. ..... अलंकार में एक ही शब्द की आवृत्ति होती है और अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं।

(क) श्लेष (ख) अनुप्रास (ग) यमक (घ) उत्प्रेक्षा

16. जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाए, वहाँ अलंकार होता है—

(क) रूपक (ख) उत्प्रेक्षा (ग) भ्रान्तिमान (घ) उपमा

17. जहाँ उपमेय (प्रस्तुत) पर उपमान (अप्रस्तुत) का अभेद आरोप किया जाता है, वहाँ अलंकार होता है—

(क) उपमा (ख) उत्प्रेक्षा (ग) रूपक (घ) दृष्टान्त

18. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून ।।

में अलंकार है—

(क) उपमा (ख) यमक (ग) श्लेष (घ) रूपक

19. सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है।
कि सारी ही कि नारी है, कि नारी ही कि सारी है ।। पद में कौन-सा अलंकार है ?

(क) यमक (ख) अनुप्रास (ग) भ्रान्तिमान (घ) सन्देह

20. जहाँ किसी वस्तु का इतना बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाए कि सामान्य लोक-सीमा का उल्लंघन हो जाए, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है ?

(क) अतिशयोक्ति (ख) दृष्टान्त
(ग) अनन्वय (घ) प्रतीप

21. "अब जीवन की कपि आस न कोय, कनगुरिया की मुँदरी कँगना होय।।" में अलंकार है—

(क) अतिशयोक्ति (ख) अनुप्रास
(ग) दृष्टान्त (घ) उत्प्रेक्षा

22. कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
उहिं खाय बौराय जग, इहिं पाय बौराय।।
में अलंकार है—
(क) रूपक (ख) उत्प्रेक्षा (ग) यमक (घ) श्लेष

23. "जनक वचन छूए बिरवा लजारु के से, वीर रहे सकल सकचि सिरं नाय के।" पद में अलंकार है—
(क) अनुप्रास (ख) यमक (ग) श्लेष (घ) उपमा

24. "ओ चिन्ता की पहली रेखा, अरे विश्व वन की प्याली।" में अलंकार है—
(क) यमक (ख) रूपक
(ग) श्लेष (घ) प्रतीप

25. जहाँ उपमेय व उपमान के साधारण धर्म में भिन्नता होते हुए भी बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव से कथन किया जाए, वहाँ अलंकार होता है—
(क) उत्प्रेक्षा (ख) सन्देह
(ग) दृष्टान्त (घ) अतिशयोक्ति

टिप्पणी

अभिमान

बिलासिय को गांधु में निर्भासोंप ।
धुतम लगा, सम्बन्धु उत्तम
काली ईश लगा गया न आप ॥
उजालिया ले गया